भाषा शिक्षणः सीखने के कुछ अवसर

अनुपमा तिवाड़ी

राजस्थान के टोंक शहर में अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा पिछले तीन साल से एक उच्च प्राथमिक विद्यालय संचालित किया जा रहा है। इस विद्यालय में सभी बच्चे लगभग छह किलोमीटर दूर बम्बोर गांव से पढ़ने आते हैं। कक्षा में सभी बच्चे और शिक्षिका फर्श पर बिछी दरी पर बैठते हैं। कोशिश यह रहती है कि बच्चे स्वानुशासित और सहज महसूस करें। बच्चों की सहभागिता शिक्षण प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण रहती है। कक्षा में अमूमन बच्चे एक-एक कर अपनी बात रखते हैं और शिक्षिका की बात सुनते हैं। बच्चों के साथ एक विस्तृत योजना बनाकर काम किया जाता है ताकि बच्चे भाषा शिक्षण के अपेक्षित उद्देश्यों को हासिल कर पाएं तथा विषय के प्रति उनकी रुचि बनी रहे। पिछले दो साल से इन बच्चों के साथ हिंदी विषय में यही शिक्षिका काम कर रही हैं इसलिए बच्चों और शिक्षिका के बीच सहज रिश्ता बन गया है। शिक्षिका बच्चों के साथ अपने काम की योजना साझा करती हैं। बच्चे और शिक्षिका एक-दूसरे के तौर तरीकों से वाकिफ हैं।

आमतौर पर शिक्षिका अध्याय को परिवेश से जोड़ने की कोशिश करती हैं। अपरिचित शब्दों के अर्थ के लिए बच्चों को शब्दकोश का प्रयोग करने एवं सन्दर्भ में अर्थ खोजने के अवसर देती हैं। अध्याय में आए मुहावरे एवं लोकोक्तियों का अर्थ खोजने एवं उपसमूहों में प्रश्नों पर आपस में चर्चा करने और कहानी को अपने शब्दों में लिखने तथा उस पर अभिनय करने, चित्र बनाने, अवलोकन करने के अवसर देती हैं। शिक्षिका अपनी योजना में जरूरी नहीं कि हर पाठ पर ये सब काम करवाएं। वे अध्याय और बच्चों की जरूरत के मुताबिक क्या करना ठीक है, इसे ध्यान में रखकर योजना बनाती हैं।

वे कभी-कभी बच्चों को गृहकार्य भी देती हैं जो मुख्य रूप से किसी संबंधित व्यक्ति से चर्चा करके जानने और लिखने जैसा काम होता है। जब कभी निर्धारित कालांश में कुछ बच्चों का काम अधूरा रह जाता है तब भी बच्चे उसे घर से पूरा करके लाते हैं। कुछ बच्चे नहीं कर पाते तो वे उसकी वजह सभी के बीच रखते हैं। बच्चों को दिया जाने वाला गृहकार्य उनके कक्षा में सीखे हुए को आगे बढ़ाने में मदद करता है। बच्चे कक्षा में अपने विचार रखने और उन्हें लिखने के प्रति काफी सहज हैं। वे जो भी लिखते हैं उसमें वे अपनी कल्पना और विचार खुलकर अभिव्यक्त करते हैं। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए वे अपने तर्क भी रखते हैं। ऐसे अवसर बच्चों को अपनी बात कहने और लिखने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्कूल में 'राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का उपयोग किया जाता है। विद्यालय में हिंदी विषय की कक्षा 7 (वसंत भाग-2) में शिक्षिका ने अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ 'मिठाईवाला' पाठ पर काम किया उसी से जुड़े कुछ अनुभव यहां साझा करने का प्रयास किया जा रहा है।

कहानीः मिठाईवाला

भगवती प्रसाद वाजपेयी द्वारा लिखी उक्त कहानी में एक मौहल्ले में एक फेरीवाला फेरी लगाकर-लगाकर पहले खिलौने बेचता था फिर उसके छह महीने बाद मुरली बेचने लगा और फिर मिठाई बेचने लगा। मिठाई जो कि खट्टी-मिट्ठी, मुंह में जल्दी न घुलने वाली होती हैं। फेरीवाला इतने मीठे स्वर में आवाज लगाकर चीजें बेचता था कि बच्चे अपने घरों से निकल-निकल कर झुण्ड के रूप में उसे घेरे रहते थे। वह लागत जितनी कीमत में ही चीजें बेचता था। उसे मुनाफा कभी हो पाता, तो कभी नहीं। अमूमन लोगों की फेरीवालों के बारे में ऐसी धारणा होती है कि वे कहते तो हैं कि वे सस्ती चीजें बेच रहे हैं जबकि ऐसा होता नहीं है। लेकिन वह जिन दामों में चीजें बेचता था वह इतनी सस्ती होती थीं कि कई लोग तो सोचते थे कि यह इतना सस्ता बेच रहा है इसमें इसे क्या बचता होगा?

एक बार एक बच्चे की मां रोहिणी ने फेरीवाले से पूछा कि तुम इस मौहल्ले में पहली बार आए हो? तब वह कहता है कि नहीं पहले भी आ चुका हूं। बातचीत में खुलासा होता है कि मिठाई बेचने से पहले वह मुरली बेचने आया था और उससे भी पहले वह खिलौने बेचने आ चुका है। रोहिणी कहती है कि तुम इतना सस्ता बेचते हो तो तुम्हें क्या बचता होगा? तब वह कहता है कि मेरे पास पैसे की कमी नहीं है लेकिन जो नहीं है वह इन बच्चों के बीच में आकर पा जाता हूं। मेरे भी घर में सुन्दर पत्नी थी, दो सोने जैसे खेलते-कूदते बच्चे थे, बाहर वैभव और अन्दर परिवार का सुख था पर आज कुछ भी नहीं है। यह कहते हुए उसकी आंखें नम हो जाती हैं और फिर वह रोहिणी के बच्चों को मिठाई देने के बाद पैसे भी वहीं छोड़ जाता है।

कहानी का अंत कक्षा के बच्चों को भी कुछ क्षण के लिए उदास कर देता है और बच्चों के मन में उस फेरीवाले के प्रति संवेदना पैदा होने लगती है।

पाठ पर काम करने के दौरान कक्षा में फेरीवाले पर चर्चा की गई। बच्चों ने बताया कि उनके गांव में भी फेरीवाले (घूम-घूम कर सामान बेचने वाले) आते हैं। एक बच्चे ने कहा, ''दीदी हमारे गांव में फेरीवाले ठेले पर कंघा, शीशा, चाकू, रबर, नाखुनी (नेल पोलिश), बिंदी बेचने आते हैं और सामानों के नाम ले-लेकर बेचने के लिए आवाज लगाते हैं''। दूसरे ने कहा, ''दीदी सब्जी वाले भी साईकिल पर बड़ा-सा टोकरा रखकर सब्जी बेचने आते हैं, कुछ सब्जी वाले ठेले पर भी सब्जी लाते हैं''। एक अन्य बच्चे ने कहा, ''दीदी यहां (टोंक) में तो फेरी वाले कम आते हैं''। शिक्षिका ने पूछा कि टोंक में कम क्यों आते हैं? बच्चों ने जवाब दिया, ''दीदी यहां तो बाजार है, तो लोग बाजार में जाकर ही चीजें खरीद लेते हैं। गांव तो थोड़ा दूर है इसलिए फेरीवाले वहां सामान ले जाकर बेचते हैं क्योंकि गांव में तो हर चीज की दुकान नहीं होती है और उन्हें हर चीज खरीदने के लिए शहर में आना पड़ता है। हमारे गांव में तो 2-3 छोटी-छोटी दुकानें हैं जिन पर बिस्कुट, टॉफी, इमली, बीडी, माचिस जैसी चीजें ही मिलती हैं। जब फेरी वाले हमारे गांव में आते हैं तब हमारे गांव की औरतें उनसे बिंदी, चूड़ी जैसी चीजें खरीदती हैं। कोई-कोई तो कहती हैं कि हम तो शहर से लाएंगे''। बातचीत के बाद शिक्षिका ने सभी से अध्याय पढ़ने के लिए कहा। इसके बाद 2-3 बच्चों ने अपने शब्दों में अध्याय को कक्षा में सुनाया।

शिक्षिका ने पाठ पर काम करने के दौरान ही बच्चों को गृहकार्य दिया कि आप अपने गांव में किसी फेरीवाले से बात करके उनके जीवन और काम के अनुभवों के बारे में जानेंगे। जैसे आप उनका नाम पूछ सकते हैं, वे कब से यह काम कर रहे हैं? उन्हें यह काम करते हुए कैसा लग रहा है? उन्होंने इसी काम को क्यों चुना? वे आगे क्या करना चाहते हैं? उनके परिवार के बारे में भी पूछ सकते हैं लेकिन इसके लिए आपको पहले कुछ सवाल बनाने होंगे। दूसरे, यह ध्यान रखना होगा कि उन्हें आपका कोई सवाल बुरा नहीं लगे। तीसरे, यदि वे कुछ सवालों के जवाब नहीं दें तो उत्तर पाने के लिए जबरदस्ती नहीं करनी है। अंतिम यह कि उनसे बात करने से पहले उनसे सहमति लेना जरूरी है। इसी तरह से आप अपने परिवार में दादा-दादी या मम्मी-पापा से भी फेरीवालों के बारे में बात करके कुछ लिख सकते हैं जैसे बहुत साल पहले यानी जब आपके दादा-दादी जवान थे तब भी आपके गांव में इसी तरह से फेरीवाले सामान बेचने आते थे या कुछ दूसरी तरह से? तब से अब तक फेरीवालों के सामान बेचने के तरीके में कुछ बदलाव आया है या पहले जैसा ही है? यदि आप किसी से बात करके

नहीं आना चाहते तो अब यह पाठ पढ़ने के बाद आप फेरीवालों के बारे में क्या सोचते हैं? इस पर भी लिखकर ला सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने फेरीवालों के संबंध में कुछ भी स्वेच्छा से लिखकर लाने के लिए कहा।

गृहकार्य में सभी बच्चे कुछ-कुछ लिखकर लाए। नीचे दिए गए बच्चों के अंशों में बच्चों के नाम बदल दिए गए हैं। इनमें से सुनीता ने फेरीवाले से बात की, मुकेश ने अपनी दादी से बात की और प्रियंका ने पाठ को पढ़ने के बाद अपने परिवेश में फेरीवालों की स्थिति को महसूस करते हुए कुछ इस प्रकार लिखाः

सुनीता ने फेरीवाले को नमस्कार करके अपने सवालों के जवाब पूछे। उसने स्वयं 16 सवाल बनाए। फेरीवाले से बात करते हुए उसने महसूस किया कि किसी का भी काम छोटा-बड़ा नहीं होता है। उसे बुरा लगता है जब लोग उनके साथ किए जा रहे व्यवहार के बारे में नहीं सोचते हैं और ये तक बोल देते हैं कि ये तो कल का सामान ही आज भी उठा कर ले आया है। ये तो कैसा भी सामान उठा कर ले आते हैं, हम तो बाजार से अच्छा सामान लाएंगे। सुनीता अंत में लिखती है कि किसी भी इंसान या प्राणी की इज्जत करना ही हमारा अपना मान है।

मुकेश को ‘मिठाईवाला’ पाठ में मिठाईवाले का मिठाई छोड़ कर चले जाने वाली बात दिल को छूने वाली/मार्मिक लगी। मुकेश ने अपनी दादी से बातचीत में लिखा कि पहले फेरीवाले कम आते थे। आजकल ज्यादा आते हैं। पहले वे बैलगाड़ियों में बहुत तरह का सामान लादकर लाते थे और धीमी आवाज में सामान बेचने के लिए आवाज लगाते थे क्योंकि लोग घरों के बाहर ही चबूतरों और पेड़ों के नीचे बैठे रहते थे अब तो उन्हें तेज आवाज लगानी पड़ती है क्योंकि अब लोग अपने घर के दरवाजे बंद करके रखते हैं। मुकेश का कहना है कि पहले मुझे फेरीवाले अच्छे नहीं लगते थे, अब अच्छे लगने लगे हैं। यहां मुकेश अपनी दादी से फेरीवालों के बारे में बातचीत करके उनके समय की बात जान रहा है। उसका अपनी दादी से जानने-सीखने का एक रिश्ता बन रहा है। यहां मुकेश पहले और आज की स्थितियों में आए बदलावों को देख पा रहा है।

प्रियंका ने लिखा कि उसको ‘मिठाईवाला’ पाठ में फेरीवाले का मीठे स्वर में बोलकर अपना सामान बेचना अच्छा लगा। उसने लिखा कि लोग फेरी लगाकर लोहे का सामान खरीदने वालों को कबाड़ी कहते हैं और उन्हें नीचा समझते हैं। लोगों की नजर में उनकी इज्जत नहीं है, बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो कि उनकी इज्जत करते हैं यह उसे अच्छा नहीं लग रहा है। उसका कहना है कि जब उसने यह पाठ नहीं पढ़ा था तब भी वह फेरीवालों को लोहे-लक्कड़ वाले भैया या अंकल कहकर ही बुलाती थी। पाठ पढ़कर वह फेरीवालों की जिंदगी के बारे में और अधिक जान पाई है कि उनकी जिंदगी भी हमारी जिंदगी जैसी ही होती है। उनका व्यवसाय छोटा है, पर छोटा नहीं है।

इन तीनों अनुभवों को पढ़ने पर लगता है कि बच्चों के साथ किया जा रहा शिक्षण कार्य उनकी भाषायी अभिव्यक्ति के साथ-साथ उन्हें अधिक संवेदनशील बनाने की ओर अग्रसर है। शिक्षण कार्य में शिक्षक की भूमिका और शिक्षण प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें शिक्षक का विषय का ज्ञान, शिक्षा की समझ, उसकी इच्छा शक्ति, उसका आचरण, उसकी संवेदनशीलता का असर बच्चों पर भी दिखाई देता है। साथ ही भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की बात करें तो इस प्रकार बच्चों के साथ किए जा रहे कार्य से बच्चों की भाषा विकसित होती है। बच्चे स्वयं अपने व दूसरों के द्वारा किए जा रहे व्यवहारों का विश्लेषण करने लगते हैं। वे मार्मिक क्षणों को महसूस करते हुए अधिक संवेदनशीलता महसूस करने लगते हैं और अधिक निर्भीकता तथा ईमानदारी के साथ अपने अनुभवों को लिख पाते हैं। ◆

लेखिका परिचयः पिछले करीब 20 साल से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। फिलहाल राजस्थान के टोंक जिले में अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन में कार्यरत हैं।